हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में होने वाला

# सुन्नतों भरा बयान

# अस्ह़ाबे कह्फ़ का वाक़िआ़

10-November-2016

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه     وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه     وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَاف (**तर्जमा :** मैं ने सुन्नत ए'तिकाफ़ की निय्यत की)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! जब भी मस्जिद में दाख़िल हों, याद रख कर नफ़्ली ए'तिकाफ़ की निय्यत फ़रमा लिया करें, जब तक मस्जिद में रहेंगे, नफ़्ली ए'तिकाफ़ का सवाब ह़ासिल होता रहेगा और ज़िमनन मस्जिद में खाना, पीना, सोना भी जाइज़ हो जाएगा।

## दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने राह़त निशान है : जो मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है, उस का दुरूद मुझ तक पहुंच जाता है, मैं उस के लिये इस्तिग़फ़ार करता हूं और इस के इ़लावा उस के लिये 10 नेकियां लिखी जाती हैं। (معجم اوسط، من اسمہ احمد، ۱/ ۴۴۶، رقم : ۱۶۴۲)

*गर्चे हैं बेह़द क़ुसूर तुम हो अ़फ़ुव्वो ग़फ़ूर*
*बख़्श दो जुर्मो ख़त़ा तुम पे करोड़ों दुरूद*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 266)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!     صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! ह़ुसूले सवाब की ख़ात़िर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं :

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلْمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج۶ ص۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

**दो मदनी फूल :-**

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

## बयान सुनने की निय्यतें

निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा। ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ात़िर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा। ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा। ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा। ۞ صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْبِ، اُذْكُرُوااللّٰهَ، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा। ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## अल्लाह की निशानियों में से एक निशानी

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आज हम **"अस्ह़ाबे कह्फ़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم **का वाक़िआ़"** सुनने की सआ़दत ह़ासिल करेंगे। **अल्लाह** तआ़ला ने कुरआने करीम की मुख़्तलिफ़ सूरतों में पिछली उम्मतों के सबक़ आमोज़ वाक़िआ़त, उन पर नाज़िल होने वाली ने'मतें, अ़ज़ाबात और मुख़्तलिफ़ ह़ैरत अंगेज़ अ़जाइबात और निशानियों को बयान फ़रमाया है। अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का वाक़िआ़ भी अ़जाइबाते कुरआनिय्या में से एक तअ़ज्जुब ख़ेज़ और सबक़ आमोज़ वाक़िआ़ है, जिस का ज़िक्र कुरआने करीम के पंद्रहवें पारे की **"सूरए कह्फ़"** में मौजूद है। इस वाक़िए़ का बयान कुरआने करीम में इन अल्फ़ाज़ के साथ फ़रमाया गया है :

اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ﴿۹﴾ اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَاۤ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ﴿۱۰﴾

(پ۱۵، الکھف: ۹-۱۰)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *क्या तुम्हें मा'लूम हुवा कि पहाड़ की खो और जंगल के किनारे वाले हमारी एक अ़जीब निशानी थे, जब उन जवानों ने ग़ार में पनाह ली फिर बोले ऐ हमारे रब ! हमें अपने पास से रह़मत दे और हमारे काम में हमारे लिये राहयाबी (राह पाने) के सामान कर।*

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ तफ़्सीर "**सिरात़ुल जिनान**" में इस आयते मुबारका के तह़्त लिखा है कि यहां से अस्ह़ाबे कह्फ़ (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم) का वाक़िआ़ शुरूअ़ होता है और इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी अ़जीबो ग़रीब निशानियों में से एक निशानी क़रार दिया है क्यूंकि इस वाक़िए़ में बहुत सी नसीह़तें और ह़िक्मतें हैं।

(सिरात़ुल जिनान, पा. 15, अल कह्फ़, तह़्तुल आयत : 5, 9 / 540)

इसी आयते मुक़द्दसा में मौजूद लफ़्ज़े "رَقِیْم" की वज़ाह़त करते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : "رَقِیْم" उस वादी का नाम है जिस में अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم जल्वा फ़रमा हैं।

(تفسیر خازن، پ۱۵، الکھف، تحت الآیۃ: ۹،۳/۱۹۸)

**आइये** ! अब हम अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم के इस रूह़ानी व ईमान अफ़रोज़ वाक़िए़ के मुतअ़ल्लिक़ सुनते हैं और इस से ह़ासिल होने वाले मदनी फूल चुनते हैं। चुनान्चे,

## अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم का वाक़िआ़

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 617 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल तफ़्सीर "**सिरात़ुल जिनान**" जिल्द 5, सफ़ह़ा 541 पर अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم के ईमान अफ़रोज़ वाक़िए़ को कुछ यूं बयान किया गया है कि अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم उफ़्सूस नामी शहर के शरीफ़ व क़ाबिले एह़तिराम लोगों में से ईमानदार लोग थे। उन के ज़माने में दक़्यानूस नामी एक बड़ा ज़ालिम बादशाह था, जो लोगों को ग़ैरे खुदा की इबादत पर मजबूर करता और जो शख़्स भी ग़ैरे ख़ुदा की इबादत पर राज़ी न होता, उसे क़त्ल कर डालता था। दक़्यानूस बादशाह के ज़ुल्मो सितम से अपना ईमान बचाने के लिये अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم भागे और क़रीबी एक पहाड़ में ग़ार के अन्दर पनाह ले ली, वहां सो गए और 300 बरस से ज़ियादा अ़र्से तक इसी ह़ाल में रहे। तलाश करवाने पर बादशाह को मा'लूम हुवा कि वोह एक ग़ार के अन्दर हैं, तो उस ने हुक्म दिया कि ग़ार को एक मज़बूत़ दीवार खींच कर बन्द कर दिया जाए ताकि वोह उस में (भूके प्यासे) मर जाएं और वोह ग़ार ही उन की क़ब्र हो जाए, येही उन की सज़ा है। (सिरात़ुल जिनान, 5 / 541, बित्तग़य्युर क़लील)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! आप ने सुना कि अस्हाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का ईमान की ह़िफ़ाज़त के मुआ़मले में किस क़दर ज़बरदस्त मदनी ज़ेह्न बना हुवा था कि इन ह़ज़रात ने फ़ितनों से बचने और सलामतिये ईमान की ख़ातिर अपना सब कुछ कुरबान कर के ग़ार में पनाह लेना तो गवारा कर लिया मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा किसी और को मा'बूद मानने के लिये तय्यार न हुवे, येह भी मा'लूम हुवा कि फ़ितनों के ज़माने में मख़्लूक़ से अ़लाह़िदगी इख़्तियार करना, ईमान की ह़िफ़ाज़त का निहायत मुअस्सर तरीन ज़रीआ़ है।

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अ़न क़रीब फ़ितने होंगे, जिन में बैठा हुवा खड़े शख़्स से अच्छा रहेगा और खड़ा शख़्स चलने वाले से अच्छा रहेगा और चलने वाला शख़्स दौड़ने वाले से अच्छा रहेगा। जो उस (फ़ितने) की त़रफ़ झांकेगा, तो वोह उसे भी अपनी लपेट में ले लेगा। तो जिसे बचाओ की कोई जगह या पनाह गाह मिले, तो उसे चाहिये कि वोह उस में पनाह ले ले।

(بخاری، کتاب الفتن، باب تکون فتنۃ القاعد...الخ، ۴/۴۳۶، حدیث: ۷۰۸۲)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : बैठने से मुराद है उन फ़ितनों से अलग थलग रहना, उन से बिल्कुल वासित़ा न रखना, येह ज़रीआ़ होगा फ़ितनों से ह़िफ़ाज़त का कि वोह न फ़ितनों को देखेगा, न उन का असर लेगा और खड़े होने से मुराद है दूर से उन्हें देखना, उन पर ख़बरदार और मुत्त़लअ़ होना। चलने से मुराद है उन में मश्ग़ूल होना मगर मा'मूली त़ौर पर और दौड़ने से मुराद है उन में ख़ूब मश्ग़ूल होना।

(मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 195, मुख़्तसरन)

आज भी नए नए फ़ितने सर उठा रहे हैं, लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम हर वक़्त अपने **ईमान की ह़िफ़ाज़त** की फ़िक्र में मश्ग़ूल रहें नीज़ फ़ितनों से ह़िफ़ाज़त और सलामतिये ईमान के लिये इस्लाहे़ उम्मत की कोशिशों में मसरूफ़ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहें, रोज़ाना मदनी इन्आ़मात का रिसाला

पुर करें और हर माह कम अज़् कम 3 दिन के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लें, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा। ईमान की हिफ़ाज़त और ईमान पर ख़ातिमा बिल ख़ैर के लिये मख़्सूस अवरादो वज़ाइफ़ पढ़ने का मा'मूल बनाएं। आइये ! हिफ़ाज़ते ईमान से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अवरादो वज़ाइफ़ सुनते हैं। चुनान्चे,

## ईमान पर ख़ातिमे के 4 अवराद

एक शख़्स बारगाहे आ'ला हज़रत رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ में हाज़िर हो कर ईमान पर ख़ातिमा बिल ख़ैर के लिये दुआ़ का त़ालिब हुवा, तो आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस के लिये दुआ़ फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया :

1. (रोज़ाना) 41 बार सुब्ह़ को "یَا حَیُّ یَا قَیُّوْمُ لَآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ" (**तर्जमा :** ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले ! ऐ हमेशा क़ाइम रहने वाले ! कोई मा'बूद नहीं मगर तू) अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़।
2. सोते वक़्त अपने सब अवराद के बा'द **सूरए काफ़िरून** रोज़ाना पढ़ लिया कीजिये, इस के बा'द कलाम वग़ैरा न कीजिये, हां ! अगर ज़रूरत हो तो कलाम करने के बा'द फिर सूरए काफ़िरून तिलावत कर लें कि ख़ातिमा इसी पर हो, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ख़ातिमा ईमान पर होगा।
3. तीन बार सुब्ह़ और तीन बार शाम इस दुआ़ का विर्द रखें : "اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِکَ مِنْ اَنْ نُّشْرِکَ بِکَ شَیْئًا نَّعْلَمُہٗ وَنَسْتَغْفِرُ کَ لِمَا لَا نَعْلَمُہٗ" (**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरी पनाह मांगते हैं इस से कि जान कर हम तेरे साथ किसी चीज़ को शरीक करें और हम उस से इस्तिग़फ़ार करते हैं जिस को नहीं जानते)

   (अल मल्फ़ूज़, हिस्सा 2, स. 234, हामिद ऐन्ड कम्पनी, मर्कज़ुल औलिया, लाहोर)
4. "بِسْمِ اللہِ عَلٰی دِیْنِیْ بِسْمِ اللہِ عَلٰی نَفْسِیْ وَوُلْدِیْ وَ اَھْلِیْ وَمَالِیْ" (**तर्जमा : अल्लाह** तआ़ला के नाम की बरकत से मेरे दीन, जान, औलाद और अहल व माल की हिफ़ाज़त हो) सुब्ह़ो शाम तीन तीन बार पढ़िये, दीन, ईमान, जान, माल, बच्चे सब मह़फ़ूज़ रहें।

   (शजरए क़ादिरिय्या, रज़विय्या, स. 15, मक्तबतुल मदीना, बाबुल मदीना, कराची)

(गुरूबे आफ्ताब से सुब्हे सादिक़ तक रात और आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमकने तक सुब्ह़ है और दोपहर ढले (या'नी इब्तिदाए वक़्ते ज़ोहर) से ले कर गुरूबे आफ्ताब तक शाम है)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! हमें चाहिये कि **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये ऐसी बुरी सोह़बत से बचें जिस से बरबादिये ईमान का अन्देशा हो।

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ तफ़्सीर "**सिरात़ुल जिनान**" में है : नेकों और नेकियों से मह़ब्बत, ईमान की अ़लामत है जब कि बुरों और बुराइयों से मह़ब्बत, ईमान की कमज़ोरी की अ़लामत है, लिहाज़ा हर शख़्स को चाहिये कि वोह अपनी ईमानी क़ुव्वत को अपने क़ल्बी मैलान से मा'लूम करे क्यूंकि जिन दिलों में फ़िल्मों, ड्रामों, बे ह़याइयों और गानों की मह़ब्बत हो, उन दिलों में नमाज़, ज़िक्र, दुरूद और तिलावत की मह़ब्बत नहीं समा सकती। (तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, जिल्द 1, स. 168)

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारा ईमान सलामत रखे, ईमान की सलामती के साथ ख़ातिमा बिल ख़ैर नसीब हो, गुम्बदे ख़ज़रा के साए तले शहादत की मौत नसीब हो, जन्नतुल बक़ीअ़ में मद्फ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पड़ोस में जगह नसीब हो।

*मुसलमां है **अ़त्तार** तेरी अ़त़ा से*
*हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 105)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! तफ़्सीर "**सिरात़ुल जिनान**" में है कि दक़्यानूस बादशाह ने अस्ह़ाबे कहफ़ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم को हलाक करने का येह काम जिस के सिपुर्द किया वोह नेक आदमी था, उस ने उन अस्ह़ाब رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم के नाम, ता'दाद और पूरा वाक़िआ़ एक तख़्ती पर लिखवा कर तांबे के सन्दूक़ में दीवार की बुन्याद के अन्दर मह़फ़ूज़ कर दिया और येह भी बयान किया गया है कि इसी त़रह़ एक तख़्ती शाही ख़ज़ाने में भी मह़फ़ूज़ करा दी गई। कुछ

अ़र्से बा'द दक़्यानूस हलाक हो गया, ज़माने गुज़रे, बादशाहतें बदलती रहीं, यहां तक कि एक नेक बादशाह मुक़र्रर हुवा जिस का नाम बेदरूस था और उस ने 68 साल हुकूमत की । उस के दौरे हुकूमत में मुल्क में फ़ितना, फ़साद पैदा हुवा, यूं कि बा'ज़ लोग मरने के बा'द उठने और क़ियामत आने के मुन्किर (या'नी इन्कार करने वाले) हो गए । बादशाह एक तन्हा मकान में बन्द हो गया और उस ने गिरया व ज़ारी करते हुवे बारगाहे इलाही में दुआ़ की, कि या रब عَزَّوَجَلَّ ! कोई ऐसी निशानी ज़ाहिर फ़रमा जिस से मख़्लूक़ को मुर्दों के उठने और क़ियामत आने का यक़ीन ह़ासिल हो जाए । उसी ज़माने में एक शख़्स ने अपनी बकरियों के लिये आराम की जगह ह़ासिल करने के लिये उसी ग़ार का इन्तिख़ाब किया (जिस में अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم मौजूद थे) फिर उस ने (चन्द लोगों के साथ मिल कर) दीवार गिरा दी । दीवार गिरने के बा'द कुछ ऐसी हैबत त़ारी हुई कि गिराने वाले भाग गए । अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से ख़ुशी ख़ुशी उठे, चेहरे तरो ताज़ा, त़बीअ़तें ख़ुश और ज़िन्दगी की तरो ताज़गी ब दस्तूर बर क़रार थी । एक ने दूसरे को सलाम किया और नमाज़ के लिये खड़े हो गए । (सिरातुल जिनान, 5 / 542, बित्तग़य्युर क़लील)

## फ़ितनों से बचिये और दूसरों को भी बचाइये

سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! सुना आप ने कि जो अपने दीनो ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये अपना वत़न छोड़ कर हिजरत करता है, तो **अल्लाह** तआ़ला ग़ैब से उस की ह़िफ़ाज़त के लिये ऐसे अस्बाब पैदा फ़रमा देता है कि अ़क़्लें ह़ैरान रह जाती हैं । चूंकि अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने भी अपने दीन व इस्लाम की ह़िफ़ाज़त की ख़ात़िर लोगों से अ़लाह़िदगी इख़्तियार करते हुवे ग़ार में पनाह ली, लिहाज़ा **अल्लाह** तआ़ला ने ग़ार को एक ख़ास हैबत बख़्श कर उन की ह़िफ़ाज़त फ़रमाई कि कोई उन तक जा नहीं सकता था । हमें भी चाहिये कि फ़ितनों और फ़ितना फैलाने वालों से दूर रहते हुवे नेक लोगों की सोह़बत की सूरत में ऐसा ठिकाना इख़्तियार करें जो फ़ितनों से ह़िफ़ाज़त का ज़रीआ़ हो ।

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी हमें फ़ितनों से बचने के लिये अच्छा ठिकाना इख़्तियार करने का हुक्म देते हुवे इरशाद फ़रमाया : अ़न क़रीब ऐसे फ़ितने होंगे, इन में बैठे रहने वाला, खड़े होने वाले से, खड़ा होने वाला चलने वाले से और चलने वाला दौड़ने वाले से बेहतर होगा, जो इन की त़रफ़ झांकेगा, वोह उसे उचक लेंगे, इस लिये जो कोई पनाह या ठिकाना पाए तो इस की पनाह में आ जाए।

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : इस फ़रमाने आ़लीशान में बैठने से मुराद, इन फ़ितनों से अलग थलग रहना और बिल्कुल वासित़ा न रखना है, येह इन फ़ितनों से ह़िफ़ाज़त का ज़रीआ़ होगा, वोह न फ़ितनों को देखेगा, न इन का असर लेगा। खड़े रहने से मुराद दूर से इन्हें देखना, इन पर ख़बरदार और मुत्त़लअ़ होना है। चलने से मुराद इन में मा'मूली तौ़र पर मश्ग़ूल होना है। दौड़ने से मुराद इन में ख़ूब मश्ग़ूल होना है। ठिकाने से मुराद अम्न की जगह और पनाह से मुराद वोह आदमी है जो उसे फ़ितनों से बचा ले, या'नी या तो पनाह की जगह चला जाए या ऐसे शख़्स के पास रहे जो उस को इन फ़ितनों से बचाए।

(مرقاۃ المفاتیح، ۹/۲۶۱، تحت الحدیث: ۵۳۸۴)

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने जंगे रूम के सफ़र में अस्हाबे कह्फ़ के ग़ार के पास से गुज़रते वक़्त उस ग़ार में दाख़िल होने की ख़्वाहिश का इज़्हार किया, तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने उन्हें मन्अ़ किया और येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾

(پ۱۵، الکهف: ۱۸)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *ऐ सुनने वाले ! अगर तू उन्हें झांक कर देखे तो उन से पीठ फेर कर भागे और उन से हैबत में भर जाए।*

(تفسیر خازن، الکهف، تحت الآیة: ۱۸، ۳/۲۰۵ ملخصاً)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! अस्हाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم ने जागने के बा'द सब से पहले एक दूसरे को सलाम किया और फिर नमाज़ अदा की। इन के इस अ़मल से मा'लूम हुवा कि सलाम व नमाज़ बहुत क़दीम इ़बादतें हैं। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस्लाम में भी इन्हें एक ख़ास अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत ह़ासिल है मगर अफ़्सोस ! कि अब सलाम जैसी प्यारी प्यारी सुन्नत मिटती जा रही है और बद क़िस्मती से मसाजिद भी नमाज़ियों से ख़ाली होती जा रही हैं। ह़ालांकि अह़ादीसे मुबारका में नमाज़ पढ़ने और मुसलमानों को सलाम करने की दिल नशीन ख़ुश ख़बरियां इरशाद फ़रमाई गई हैं। आइये ! बतौ़रे तरग़ीब सलाम व नमाज़ की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 2 अह़ादीसे मुबारका सुनते हैं। चुनान्चे,

नबिय्ये मुकर्रम, शफ़ीए़ उमम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اَفۡشُوا السَّلَامَ تَسۡلَمُوۡا सलाम को आ़म करो, सलामती पाओगे।

(ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب افشاء السلام...الخ، ذکر اثبات السلامة ... الخ، 357/1، حدیث: 491)

नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि मैं ने आप की उम्मत पर 5 नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं और इन के बारे में अपने आप से अ़ह्द किया है कि जो इन्हें पाबन्दी के साथ इन के वक़्त में अदा करेगा, उसे जन्नत में दाख़िल करूंगा और जो इन को पाबन्दी के साथ अदा न करेगा, उस के लिये मेरे पास कोई अ़ह्द नहीं।

(ابو داود، کتاب الصلوۃ، باب المحافظة علی وقت الصلوۃ، ۱/ ۱۸۸، حدیث: ۴۳۰)

लिहाज़ा हम सभी को चाहिये कि सलामती ह़ासिल करने और जन्नत पाने के लिये सलाम की सुन्नत को आ़म करें और पंज वक़्ता नमाज़े बा जमाअ़त की पाबन्दी करते रहें। आइये ! हम सब निय्यत करते हैं कि आज के बा'द हमारी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं होगी, पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त तक्बीरे ऊला के साथ अदा करने की कोशिश करेंगे। اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم ने नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर यमलीख़ा से कहा कि आप जाइये और बाज़ार से कुछ खाने को भी लाइये और येह भी ख़बर लाइये कि दक़्यानूस बादशाह का हम लोगों के बारे में क्या इरादा है । वोह बाज़ार गए, तो उन्हों ने शहर के दरवाज़े पर इस्लामी अ़लामत देखी और वहां नए नए लोग पाए, येह देख कर उन्हें तअ़ज्जुब हुवा कि येह क्या मुआ़मला है ? कल तक तो कोई शख़्स अपना ईमान ज़ाहिर नहीं कर सकता था जब कि आज इस्लामी अ़लामतें ज़ाहिर हैं, फिर कुछ देर बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ तन्दूर वाले की दुकान पर गए और खाना ख़रीदने के लिये उसे दक़्यानूसी रुपया दिया, जिस का रवाज सदियों पहले ख़त्म हो गया था और उसे देखने वाला भी कोई बाक़ी न रहा था । बाज़ार वालों ने ख़याल किया कि कोई पुराना ख़ज़ाना इन के हाथ आ गया है । चुनान्चे, वोह उन्हें पकड़ कर ह़ाकिम के पास ले गए, वोह नेक शख़्स था, उस ने उन से दरयाफ़्त किया कि ख़ज़ाना कहां है ? उन्हों ने कहा : ख़ज़ाना कहीं नहीं है, येह रुपया हमारा अपना है । ह़ाकिम ने कहा : येह बात किसी त़रह़ क़ाबिले यक़ीन नहीं क्यूंकि इस में जो साल लिखा हुवा है वोह 300 बरस से ज़ियादा का है और आप नौजवान हैं, हम लोग बूढ़े हैं, हम ने तो कभी येह सिक्का देखा ही नहीं । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : मैं जो दरयाफ़्त करूं वोह ठीक ठीक बताओ तो मस्अला ह़ल हो जाएगा । येह बताओ कि दक़्यानूस बादशाह किस ह़ाल में है ? ह़ाकिम ने कहा : आज रूए ज़मीन पर इस नाम का कोई बादशाह नहीं, सेंकड़ों बरस पहले एक बे ईमान बादशाह इस नाम का गुज़रा है । आप ने फ़रमाया : कल ही तो हम उस के ख़ौफ़ से जान बचा कर भागे हैं और मेरे साथी क़रीब के पहाड़ में एक ग़ार के अन्दर पनाह गुज़ीं हैं, चलो मैं तुम्हें उन से मिला दूं । ह़ाकिम और शहर के सरदार और एक कसीर मख़्लूक़ उन के हमराह ग़ार के किनारे पहुंच गए । अस्ह़ाबे कह्फ़ यमलीख़ा के इन्तिज़ार में थे, जब उन्हों ने कसीर लोगों के आने की आवाज़ सुनी, तो समझे कि यमलीख़ा पकड़े गए और दक़्यानूसी फ़ौज हमारी तलाश में

आ रही है। चुनान्चे, वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हम्द में मश्गूल हो गए। इतने में शहर के लोग पहुंच गए और यमलीखा ने बक़िय्या हज़रात को तमाम क़िस्सा सुनाया, उन हज़रात ने समझ लिया कि हम अल्लाह तआला के हुक्म से इतना तवील ज़माना (या'नी 300 साल से भी ज़ियादा अर्से तक) सोए रहे और अब इस लिये उठाए गए हैं कि लोगों के लिये मौत के बा'द ज़िन्दा किये जाने की दलील और निशानी बनें। जब हाकिमे शहर ग़ार के किनारे पहुंचा तो उस ने तांबे का सन्दूक़ देखा, उस को खुलवाया, तो तख़्ती बर आमद हुई, उस तख़्ती में अस्हाबे कहफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم और उन के कुत्ते का नाम लिखे हुवे थे।

(सिरातुल जिनान, 5 / 542, बित्तग़य्युर क़लील)

## अस्हाबे कहफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की ता'दाद और अस्माए मुबारका

ख़लीफ़ए मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द, शैख़ुल हदीस, हज़रते अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अस्हाबे कहफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की ता'दाद में जब लोगों का इख़्तिलाफ़ हुवा, तो येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

قُلْ رَّبِّیْۤ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا یَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِیْلٌ۬ ﴿پ۱۵، الکہف:۲۲﴾

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ मेरा रब उन की गिनती ख़ूब जानता है, उन्हें नहीं जानते मगर थोड़े।*

(अजाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन, स. 153)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने फ़रमाया : मैं उन्ही कम लोगों में से हूं, जो अस्हाबे कहफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की ता'दाद को जानते हैं। अस्हाबे कहफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की ता'दाद 7 है, जिन के अस्माए गिरामी येह हैं : (1) मक्सलमीना (2) यमलीख़ा (3) मरतूनस (4) बैनूनस (5) सारीनूनस (6) ज़ूनवानस (7) कश्फ़ी-ततनूनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم اَجْمَعِیْن और आठवां उन का कुत्ता जिस का नाम क़ितमीर है।

(تفسیر خازن، پ۱۵، الکہف، تحت الآیۃ: ۲۲، ۳/۲۰۷)

# अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُم के नामों की बरकत

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن ने अपनी किताबों में अस्ह़ाबे कह्फ़ के नामों के फ़वाइद व ख़वास बयान किये हैं । आइये ! हम भी इन नामों की बरकतें सुनते हैं । चुनान्चे,

मन्क़ूल है कि अगर येह नाम लिख कर दरवाज़े पर लगा दिये जाएं तो मकान जलने से मह़फ़ूज़ रहता है, सरमाए पर रख दिये जाएं तो चोरी नहीं होता, कश्ती या जहाज़ इन की बरकत से ग़र्क़ नहीं होते, भागा हुवा शख़्स इन की बरकत से वापस आ जाता है, कहीं आग लगी हो और येह नाम कपड़े में लपेट कर डाल दिये जाए, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से आग बुझ जाती है, बच्चे के रोने, बारी के बुख़ार, दर्दे सर, उम्मुस्सिब्यान (या'नी ख़ास क़िस्म के दिमाग़ी झटकों और दौरों की बीमारी), ख़ुश्की व तरी के सफ़र में जानो माल की ह़िफ़ाज़त, अ़क्ल की तेज़ी और क़ैदियों की आज़ादी के लिये येह नाम फ़ाइदे मन्द हैं । (حاشیہ جمل،پ۱۵، الکھف، تحت الآیۃ: ۲۲، جز ۲، ۴/۴۲۳، بتغیرقلیل)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب !     صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُم के सन्दूक़ से निकलने वाली तख़्ती में इन के नामों के इ़लावा येह भी लिखा हुवा था कि येह जमाअ़त अपने दीन की ह़िफ़ाज़त के लिये दक़्यानूस के डर से इस ग़ार में पनाह गुज़ीं हुई, दक़्यानूस ने ख़बर पा कर एक दीवार से इन्हें ग़ार में बन्द कर देने का हुक्म दिया, हम येह ह़ाल इस लिये लिखते हैं ताकि जब कभी येह ग़ार खुले तो लोग इन के ह़ाल पर मुत्त़लअ़ हो जाएं । येह तख़्ती पढ़ कर सब को तअ़ज्जुब हुवा और लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बजा लाए कि उस ने ऐसी निशानी ज़ाहिर फ़रमा दी, जिस से मौत के बा'द उठने का यक़ीन ह़ासिल होता है । ह़ाकिमे शहर ने अपने बादशाह बेदरूस को इस वाक़िआ़ की इत्त़िलाअ़ दी । चुनान्चे, बादशाह भी बक़िय्या मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों और सरदारों को ले कर ह़ाज़िर हुवा और शुक्रे इलाही का सज्दा बजा लाया कि अल्लाह तआ़ला ने उस की दुआ़ क़बूल की । अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُم ने बादशाह से मुआ़नक़ा किया या'नी गले मिले और फ़रमाया : हम तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द करते हैं ।

وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَا تُهُ **अल्लाह** तआला तेरी, तेरे मुल्क की हिफ़ाज़त फ़रमाए और जिन्नात व इन्सानों के शर से बचाए। बादशाह खड़ा ही था कि वोह हज़रात अपनी ख़्वाब गाहों की त़रफ़ वापस हो कर मसरूफ़े ख़्वाब हुवे और **अल्लाह** तआला ने उन्हें वफ़ात दे दी। बादशाह ने एक दरख़्त की लकड़ी के सन्दूक़ में उन के जिस्मों को मह़फ़ूज़ किया और **अल्लाह** तआला ने रो'ब से उन की हिफ़ाज़त फ़रमाई कि किसी की मजाल नहीं कि वहां पहुंच सके। बादशाह ने ग़ार के मुंह पर मस्जिद बनाने का हुक्म दिया और एक ख़ुशी का दिन मुअ़य्यन (या'नी मख़्सूस) कर दिया कि हर साल लोग ईद की त़रह़ वहां आया करें। (सिरातुल जिनान, पा. 15, अल कह्फ़, तह़्तुल आयत : 5-10, 9 / 5, 543 / 641, माख़ूज़न, बित्तग़य्युर क़लील)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! बयान कर्दा वाक़िए से हमें 3 मदनी फूल ह़ासिल हुवे : पहला येह कि मरने के बा'द ज़िन्दा हो कर उठना ह़क़ है और अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم का वाक़िआ़ इस की निशानी और दलील है। दूसरा येह कि करामाते औलिया ह़क़ है, अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم नबी नहीं बल्कि बनी इस्राईल के वली हैं, इन की करामत येह बयान हुई कि ग़ार में 300 साल से ज़ियादा अ़र्से तक सोते रहे। इतना अ़र्सा बे ग़िज़ा सोना और फ़ना न होना यक़ीनन एक करामत है। यहां येह बात ज़ेह्न नशीन रहे कि करामत सोते में भी ज़ाहिर हो सकती है, इस के लिये वली का जागा हुवा होना ज़रूरी नहीं। जैसा कि :

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की तफ़्सीरे कुरआन बनाम "**सिरात़ुल जिनान**" में है : करामत वली से सोते में भी ज़ाहिर हो सकती है और इसी त़रह़ बा'दे मौत भी। इन के जिस्मों को मिट्टी का न खाना, येह भी करामते औलिया में से है। येह ज़रूरी नहीं कि वली अपने इख़्तियार से करामत ज़ाहिर करे और उसे इ़ल्म भी हो बल्कि बा'ज़ अवक़ात बिग़ैर वली के इख़्तियार के और बिग़ैर उस के इ़ल्म के भी करामत ज़ाहिर होती है। जैसे अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُم के वाक़िए से हुवा।

(सिरातुल जिनान, पा. 15, अल कह्फ़, तह़्तुल आयत : 5, 11 / 544, बित्तग़य्युर क़लील)

तीसरा मदनी फूल येह मिला कि बुज़ुर्गों के मज़ारात के क़रीब मस्जिदें बनाना और हर साल उन का उ़र्स मनाना हरगिज़ ममनूअ़ नहीं बल्कि नेक लोगों का त़रीक़ा है । जैसा कि सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इसी वाक़िए़ की रौशनी में इरशाद फ़रमाते हैं : बुज़ुर्गों के मज़ारात के क़रीब मस्जिदें बनाना अहले ईमान का क़दीम त़रीक़ा है। बुज़ुर्गों के क़ुर्ब में बरकत ह़ासिल होती है, इसी लिये **अल्लाह** वालों के मज़ारात पर लोग ह़ुसूले बरकत के लिये जाया करते हैं। क़ब्रों की ज़ियारत सुन्नत और सवाब का बाइ़स है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पा. 15, अल कह्फ़, तह़तुल आयत : 21, स. 552, बित्तग़य्युर क़लील)

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर साल के आग़ाज़ में शुहदाए उहुद عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की क़ब्रों की ज़ियारत को तशरीफ़ ले जाते और उन के लिये दुआ़ फ़रमाते कि सलामती हो तुम पर (राहे ह़क़ में) तुम्हारे सब्र करने के सबब और क्या ही अच्छा है आख़िरत का घर (जो तुम्हें इस के बदले में अ़त़ा हुवा) । (مُصَنَّف عَبْد الرَّزّاق، کتاب الجنائز، باب فی زیارۃ القبور، ۳/۳۸۱، رقم:۶۷۴۵ملخصاً)

सिराजुल हिन्द, ह़ज़रते सय्यिदुना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام का उ़र्स मनाना इस ह़दीसे पाक से साबित है। (फ़तावा रज़विय्या, 29 / 202, मुलख़्ख़सन)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इरशाद फ़रमाते हैं : बुज़ुर्गों के आस्तानों के बराबर मस्जिद बनाना और बरकत के लिये वहां नमाज़ें पढ़ना, क़ुरआन शरीफ़ और बहुत सी अह़ादीस से साबित है । सूरए कह्फ़ में है : لَنَتَّخِذَنَّ عَلَیْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿۲۱﴾ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क़सम है कि हम तो उन पर मस्जिद बनाएंगे ।)

(पा. 15, अल कह्फ़ : 21)

ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए अन्वर और अक्सर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के मज़ारात के पास मस्जिदें हैं, येह ख़ुद सह़ाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان या सालिह़ीन رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने बनाएं। अब मज़ाराते औलिया के पास आ़म मुसलमान मस्जिदें बनाते हैं। मक़्बूलों के क़ुर्ब में नमाज़ ज़ियादा क़बूल होती

है, मस्जिदे नबवी में एक नमाज़ का सवाब पचास हज़ार नमाज़ों के बराबर है, हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कुर्ब की वज्ह से। रब तआ़ला ने गुनहगार इस्राईलियों से फ़रमाया था : وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और दरवाज़े में सज्दा करते दाख़िल हो और कहो हमारे गुनाह मुआ़फ़ हों।)

(पा. 1, अल बक़रह : 58)

कुबूरे अम्बिया की बरकत से तौबा क़बूल होगी। (**अल्लाह** तआ़ला) ह़ज़रते सय्यिदुना ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام का वाक़िआ बयान फ़रमाता है : هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** यहां पुकारा ज़करिय्या अपने रब को।) (पा. 3, आले इमरान : 38)

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते सय्यिदतुना बीबी मरयम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के पास खड़े हो कर बेटे की दुआ़ मांगी। मा'लूम हुवा कि बुज़ुर्गों के कुर्ब में तौबा और दुआ़ बहुत क़बूल होती है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 440, मुल्तक़तन, बित्तग़य्युर क़लील)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن और अहले ह़क़ उ़लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का येह मा'मूल रहा है कि वोह अपनी मुश्किलात के ह़ल के लिये औलियाए किराम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के मज़ारात पर ह़ाज़िरी दिया करते थे। आइये ! इस ज़िम्न में मा'मूलाते बुज़ुर्गाने दीन मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे,

❖ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन इब्राहीम ख़ल्लाल ह़म्बली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे जब कोई मुआ़मला दरपेश होता है, मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मूसा बिन जा'फ़र رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का वसीला पेश करता हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी मुश्किल को आसान कर के मुझे मेरी मुराद अ़ता फ़रमा देता है।

(تاریخ بغداد، مقدمة المصنف، باب ماذکر فی مقابر بغداد...الخ، ۱/ ۱۳۳)

❖ शाफ़ेइय्यों के अ़ज़ीम पेश्वा, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे जब कोई ह़ाजत पेश आती है, तो मैं दो रक्अ़त नमाज़ अदा कर के ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा

رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मज़ारे पुर अन्वार पर जा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ मांगता हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी ह़ाजत जल्द पूरी कर देता है।

(الخیرات الحِسان، الفصل الخامس والثلاثون، ص ۹۴ ملتقطاً)

❖ ह़ज़रते सय्यिदुना यह्‌या बिन सुलैमान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुझे एक ह़ाजत दरपेश थी और मैं काफ़ी तंगदस्त भी था। मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की क़ब्रे अन्वर पर ह़ाज़िरी दी, 3 बार सूरए इख़्लास की तिलावत की और इस का सवाब आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और तमाम मुसलमानों की अरवाह़ को पहुंचाया फिर अपनी ह़ाजत बयान की। फ़रमाते हैं कि मैं इस ह़ाल में वापस आया कि मेरी ह़ाजत पूरी हो चुकी थी। (الروض الفائق، المجلس الرابع والثلاثون الخ، ص ۱۸۸)

❖ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुह़म्मद ज़ुहरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मज़ार की ह़ाज़िरी मुरादें पूरी होने के लिये मुजर्रब (या'नी तजरिबा शुदा) है और जो कोई इन के मज़ार के पास 100 मरतबा सूरए इख़्लास की तिलावत करे फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल करे, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की ह़ाजत को पूरा फ़रमा देगा। (مناقب معروف الکرخی، الباب السابع والعشرون فی ذکر فضیلۃ زیارۃ قبرہ ... الخ، ص ۲۰۰)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! सुना आप ने कि **अल्लाह** वालों के मज़ारात की भी क्या ख़ूब बहारें हैं कि यहां आने वाला ख़ाली दामन नहीं लौटाया जाता बल्कि मन की मुरादें पाता है, लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम भी बुज़ुर्गों की मह़ब्बतो अ़क़ीदत बढ़ाने के लिये शरीअ़त के दाइरे में रह कर वक़्तन फ़-वक़्तन इन के मज़ारात की ह़ाज़िरी और इन के उ़र्स में शिर्कत का एहतिमाम किया करें। उ़र्स के मौक़अ़ पर नेकी की दा'वत को आ़म करने की निय्यत से ख़ूब **''तक़्सीमे रसाइल''** की तरकीब की जाए, ज़ाइरीन को नमाज़ की पाबन्दी की तल्क़ीन की जाए, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करने और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने के लिये इनफ़िरादी कोशिश का सिलसिला किया जाए, मस्जिद व फ़िनाए मस्जिद के इलावा जहां मुमकिन हो, मदनी चेनल के ज़रीए **''मदनी मुज़ाकरा''** देखने / दिखाने का बा क़ाइदा एहतिमाम किया जाए,

"**हफ़्तावार इजतिमाअ़**" के दिन क़रीबी हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत की दा'वत दी जाए। "**मदनी तरबिय्यत गाह**" क़ाइम कर के आ़शिक़ाने रसूल को फ़र्ज़ उ़लूम, सुन्नतें व आदाब सिखाने की कोशिश की जाए।

## किताब "फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया" का तआ़रुफ़

औलियाए किराम رَحمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیہِم اَجمَعِین की शानो अ़ज़मत और इन के मज़ारात पर ह़ाज़िरी की मज़ीद बरकतें जानने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 138 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया**" का मुत़ालआ़ फ़रमाइये, येह किताब आ़रिफ़ बिल्लाह, इमाम अ़ब्दुल ग़नी बिन इस्माईल नाबुलुसी رَحمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیہ की अ़रबी किताब का उर्दू ज़बान में तर्जमा है।

اَلحَمدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस किताब में फ़ज़ाइले औलिया पर मुश्तमिल आयात, अह़ादीस के इ़लावा विलायत, करामत और औलिया की अक़्साम, इन से मुतअ़ल्लिक़ अहम उमूर, क़ब्रों के मुख़्तलिफ़ अह़वाल, जा'ली पीरों की मज़म्मत, मज़ाराते औलिया की बरकात, वहां पर ह़ाज़िरी के आदाब और बहुत सी अहम मा'लूमात को जम्अ़ किया गया है। लिहाज़ा आज ही इस किताब को मक्तबतुल मदीना के बस्ते से हदिय्यतन त़लब फ़रमा कर खु़द भी पढ़िये और दूसरों को भी पढ़ने की तरग़ीब दिलाइये। दा'वते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislami.net से इस किताब को रीड (या'नी पढ़ा) भी जा सकता है, डाउन लोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है।

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! बा'ज़ लोगों के ज़ेहनों में शैत़ान येह वस्वसा डालता है कि दिन मुअ़य्यन या'नी मख़्सूस कर के खु़शी का इज़्हार करना या उ़र्स मनाना जाइज़ नहीं। याद रखिये ! दिन मुअ़य्यन या'नी मख़्सूस कर के खु़शी का इज़्हार करने और **अल्लाह** वालों का उ़र्स मनाने में शरअ़न कोई ह़रज नहीं नीज़ येह बात भी ज़ेह्न नशीन रहे कि बिला वज्हे शरई इन जाइज़ व मुस्तह़ब कामों को नाजाइज़ कहना हरगिज़ अ़क़्ल मन्दों का त़रीक़ा नहीं। اَلحَمدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दिन मुक़र्रर कर के खु़शी का इज़्हार करना या खु़शी मिलने के दिन को अपने लिये ई़द का दिन क़रार देना, नेक व परहेज़गार लोगों के मा'मूलात में शामिल रहा है।

**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام अपने ह़वारियों (या'नी अपने अस्ह़ाब) की दरख़्वास्त पर बारगाहे इलाही में आसमान से ख़्वान उतारने और फिर उसे अपने और अपनी क़ौम के लिये ईद का दिन क़रार दिये जाने के लिये अ़र्ज़ गुज़ार हुवे, जिस का ज़िक्र पारह 7, सूरए माइदा की आयत नम्बर 114 में यूं बयान फ़रमाया गया है :

قَالَ عِيۡسَى ابۡنُ مَرۡيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَاۤ اَنۡزِلۡ عَلَيۡنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوۡنُ لَنَا عِيۡدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنۡكَ‌ۚ وَارۡزُقۡنَا وَاَنۡتَ خَيۡرُ الرّٰزِقِيۡنَ ﴿۱۱۴﴾ (پ۷، المائدۃ: ۱۱۴)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *ईसा इब्ने मरयम ने अ़र्ज़ की ऐ* ***अल्लाह*** *ऐ रब हमारे ! हम पर आसमान से एक ख़्वान उतार कि वोह हमारे लिये ईद हो हमारे अगले पिछलों की और तेरी त़रफ़ से निशानी और हमें रिज़्क़ दे और तू सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है ।*

शैख़ुल ह़दीस, ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दुआ़ से येह सबक़ मिलता है कि जिस दिन क़ुदरते ख़ुदावन्दी का कोई ख़ास निशान ज़ाहिर हो, उस दिन ख़ुशी मनाना और ख़ुशी का इज़्हार कर के ईद मनाना ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मुक़द्दस सुन्नत है ।

(अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन, स. 93, मुलख़्ख़सन)

बिलफ़र्ज़ उ़र्स के मौक़अ़ पर अगर कहीं ख़िलाफ़े शरअ़ काम होते भी हैं, तो उन कामों को ख़त्म किया जाएगा, न कि उ़र्स को । चुनान्चे,

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 679 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"जन्नती ज़ेवर"** सफ़ह़ा 206 पर है : औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के मज़ारात पर ह़ाज़िरी मुसलमानों के लिये बाइसे सआ़दत व बरकत है, इन की नियाज़ व फ़ातिह़ा, ईसाले सवाब मुस्तह़ब और ख़ैरो बरकत का बहुत बड़ा ज़रीआ़ है । अलबत्ता उ़र्सों में जो ख़िलाफ़े शरीअ़त काम होने लगे हैं, मसलन क़ब्रों को सज्दा करना, औ़रतों का बे पर्दा हो कर मर्दों के मजमअ़ में घूमते फिरना, औ़रतों का नंगे सर मज़ारों के पास झूमना, चिल्लाना, ना मह़रम मर्दों को देखना, बाजा बजाना, नाच कराना,

येह सब ख़ुराफ़ात हर ह़ालत में हर जगह ममनूअ़ हैं, बुज़ुर्गों के मज़ारों के पास तो और ज़ियादा मज़मूम हैं लेकिन इन ख़ुराफ़ात व ममनूआ़त की वज्ह से येह नहीं कहा जा सकता कि बुज़ुर्गों का उ़र्स ह़राम है बल्कि इस के बजाए जो काम ह़क़ीक़त में ह़राम और ममनूअ़ हैं, उन को रोकना लाज़िम है। नाक पर अगर मख्खी बैठ गई है, तो मख्खी को उड़ा देना चाहिये, नाक काट कर नहीं फेंक देनी चाहिये। इसी त़रह़ अगर जाहिलों और फ़ासिक़ों ने उ़र्स में कुछ ह़राम और ममनूअ़ कामों को शामिल कर दिया है, तो इन ह़राम व ममनूअ़ कामों को रोका जाएगा, उ़र्स ही को ह़राम नहीं कह दिया जाएगा।

(जन्नती ज़ेवर, स. 206, बित्तग़य्युर क़लील)

*हम को सारे औलिया से प्यार है*

*اِنْ شَآءَ اللہ ! अपना बेड़ा पार है*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम “सदाए मदीना”

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! फ़ैज़ाने कुरआन से माला माल होने, औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की मह़ब्बतो अ़क़ीदत में मज़ीद इज़ाफ़ा करने, इ़ल्मे दीन सीखने और अ़मल का जज़्बा दिल में पैदा करने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये नीज़ जै़ली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में भी बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लीजिये। जै़ली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से एक मदनी काम रोज़ाना ‘‘**सदाए मदीना**’’ लगाना भी है। दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने को ‘‘**सदाए मदीना**’’ लगाना कहते हैं, लिहाज़ा आप भी सदाए मदीना लगाइये और मसाजिद की आबाद कारी में दा'वते इस्लामी का साथ दीजिये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सदाए मदीना लगाना सुन्नते सह़ाबा है। अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़े फ़ज्र के लिये लोगों को जगाते हुवे मस्जिद तशरीफ़ लाते थे। (طبقات کبریٰ، ذکر استخلاف عمر، ۳/۲۱۳، مفہوماً)

**आइये** ! बत़ौरे तरग़ीब सदाए मदीना लगाने की एक ईमान अफ़रोज़ मदनी बहार सुनते हैं। चुनान्चे,

## कलिमए पाक का विर्द करने लगे

ज़िल्अ़ ओकाड़ा (पंजाब, पाकिस्तान) के शहर दीपालपूर के इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है कि मेरे चचा जान दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मुरीद थे। पढ़े लिखे नहीं थे मगर मदनी कामों में शिर्कत रहती। सदाए मदीना का रोज़ाना मा'मूल था और इस के लिये सुब्ह़ जल्दी बेदार हो कर दूर दूर तक सदाए मदीना लगा कर मुसलमानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये बेदार करते। इस आ़दत की बिना पर वोह "दीपालपूर" में मश्हूर थे। 26 रमज़ानुल मुबारक सिने 1426 हि. हमारे चचा सरदाराबाद (फ़ैसलाबाद) से लौट रहे थे। इ़शा की नमाज़ का वक़्त होने पर गाड़ी रोक कर नमाज़े इ़शा अदा की फिर आगे रवाना हुवे। गाड़ी तेज़ रफ़्तार के साथ जा रही थी कि अचानक चचा जान ने बुलन्द आवाज़ से कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ) पढ़ा और फ़रमाया : सब कलिमा पढ़ो। सभी ने कलिमए त़य्यिबा का विर्द शुरूअ़ कर दिया, अभी कुछ ही देर गुज़री थी कि गाड़ी को अचानक एक ज़ोरदार झटका लगा और गाड़ी उलट गई और लुढ़क्ती हुई खाई में जा गिरी। दीगर लोग मा'मूली ज़ख़्मी हुवे मगर चचा जान को शदीद ज़ख़्म आए, शदीद तक्लीफ़ के बा वुजूद उन की ज़बान पर बुलन्द आवाज़ से कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ) जारी था और इस त़रह़ कलिमए त़य्यिबा का विर्द करते हुवे हमारे चचा जान मुहम्मद रफ़ीक़ अ़त्तारी इन्तिक़ाल फ़रमा गए। इन की तद्फ़ीन दूसरे रोज़ रमज़ानुल मुबारक की 27 वीं शब अ़मल में लाई गई।

*यक़ीनन मुक़द्दर का वोह है सिकन्दर जिसे ख़ैर से मिल गया मदनी माहोल*
*अगर सुन्नतें सीखने का है जज़्बा तुम आ जाओ देगा सिखा मदनी माहोल*
*तुम्हे लुत़्फ़ आ जाएगा ज़िन्दगी का क़रीब आ के देखो ज़रा मदनी माहोल*
*यहां सुन्नतें सीखने को मिलेंगी दिलाएगा ख़ौफ़े ख़ुदा मदनी माहोल*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 646, 647)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

## निस्बत की बहारें

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! निस्बत की भी क्या ख़ूब बहारें हैं : अस्हाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم का कुत्ता, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों से निस्बत ह़ासिल होने के सबब इ़ज़्ज़ो शरफ़ वाला बन गया। याद रखिये कि ❖ निस्बत एक अ़ज़ीम ह़क़ीक़त है ❖ निस्बतों की वज्ह से बे क़द्रो क़ीमत चीज़ें, क़ीमती हो जाती हैं ❖ निस्बत को हमारे मुआ़शरे में भी बड़ी अहम्मिय्यत ह़ासिल है कि बहुत से अफ़राद को लोग सिर्फ़ उन के बाप दादा की निस्बत से पहचानते हैं ❖ दुन्या की त़रफ़ नज़र उठा कर देखें तो हमें कई अ़जाइबात नज़र आएंगे, मसलन क़दीम कुर्सियां, किताबें, फ़न पारे, क़दीम ज़माने के सिक्के, हथयार, तलवारें, त़य्यारे, लिबास, बरतन, औज़ार वग़ैरा आज भी दुन्या भर के अ़जाइब ख़ानों (Museums) की ज़ीनत हैं, इस लिये कि अब येह मा'मूली चीज़ें न रहीं बल्कि क़दीम ज़मानों, मुल्कों, बादशाहों, क़ौमों, तह्ज़ीबों और शख़्सिय्यात से मन्सूब होने के सबब इन मा'मूली चीज़ों को इतनी शोहरत व अहम्मिय्यत ह़ासिल हो गई कि अब इन्हें क़ीमती चीज़ों की त़रह़ बड़े एहतिमाम के साथ मह़फ़ूज़ रखा गया है, अगर इन चीज़ों को कोई ख़ास निस्बत ह़ासिल न होती तो येह अनमोल होने के बजाए ब दस्तूर बे क़द्रो क़ीमत ही रहतीं बल्कि बहुत पहले ही इन का वुजूद मिट चुका होता ❖ **अल्लाह** तआ़ला ने कुरआने करीम में हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जान, आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने वाले शहरे मक्का की क़सम इरशाद फ़रमाई ❖ नबिय्ये करीम, रऊफुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पाक बीबियों رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ को जब निस्बते रसूल नसीब हुई, तो वोह मोमिनों की माएं कहलाईं और ख़ाके मदीना को जब निस्बते सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ासिल हुई, तो वोह ख़ाके शिफ़ा कहलाई ❖ निस्बते मुस्त़फ़ा ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को आसमाने हिदायत का रौशन सितारा बना दिया ❖ निस्बत ही के सबब सादाते किराम अफ्ज़लो आ'ला हैं ❖ निस्बत ही की बदौलत ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام के घोड़े के क़दमों की ख़ाक सबबे ह़यात बन गई ❖ नबियों عَلَیْہِمُ السَّلَام की निस्बत का सदक़ा था कि बनी इस्राईल ताबूते सकीना की बरकत से दुश्मनों पर फ़तह़ पा लेते ❖ निस्बत ही की बरकत थी कि ह़ज़रते

सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के जिस्मे अत़हर से छू जाने वाली मुबारक क़मीस के सबब ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बीनाई लौट आई ❖ मख़्सूस मुल्कों, शहरों, अ़लाक़ों, गली कूचों, क़स्बों, मह़ल्लों, महीनों, दिनों, तारीख़ों, क़ौमों, मक़ामात व शख़्सिय्यात ह़त्ता कि रोज़ मर्रा इस्ति'माल होने वाली आ़म सी चीज़ों के क़ाबिले एह़तिराम और लाइक़े ता'ज़ीम हो जाने में इसी निस्बत का फ़ैज़ान है।

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ निस्बत की अहम्मिय्यत को मज़ीद उजागर करते हुवे फ़रमाते हैं : सफ़ा और मरवा वोह पहाड़ हैं, जिन पर ह़ज़रते सय्यिदतुना हाजिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا पानी की तलाश में 7 बार चढ़ीं और उतरीं। उस अल्लाह वाली के क़दम पड़ जाने की बरकत से येह दोनों पहाड़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निशानी बन गए और क़ियामत तक ह़ाजियों पर उस पाक बीबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की नक़्ल उतारने में इन पर चढ़ना और उतरना 7 बार लाज़िम हो गया। बुज़ुर्गों के क़दम लग जाने से वोह चीज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निशानी बन गई। मक़ामे इब्राहीम वोह पथ्थर है, जिस पर खड़े हो कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने का'बए मुअ़ज़्ज़मा की ता'मीर की, वोह भी ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बरकत से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निशानी बन गया और उस की ता'ज़ीम ऐसी लाज़िम हो गई कि त़वाफ़ के नफ़्ल उस के सामने खड़े हो कर पढ़ना सुन्नत हो गए कि सज्दे में सर उस पथ्थर के सामने (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में) झुके। जब बुज़ुर्गों के क़दम पड़ जाने से सफ़ा व मरवा और मक़ामे इब्राहीम, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निशानी बन गए और क़ाबिले ता'ज़ीम हो गए, तो अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَام और औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की क़ब्रें कि जिन में येह ह़ज़रात दाइमी क़ियाम फ़रमा हैं, यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निशानियां हैं और इन की ता'ज़ीम लाज़िम है। अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के ग़ार जिस में वोह आराम फ़रमा हैं, गुज़श्ता ज़माने के मुसलमानों ने वहां मस्जिद बनाई और रब عَزَّوَجَلَّ ने उन के काम पर नाराज़ी का इज़्हार न किया, जिस से मा'लूम हुवा कि वोह जगह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निशानी बन गई, जिस की ता'ज़ीम ज़रूरी

हो गई । जो जानवर कुरबानी के लिये या का'बए मुअ़ज़्ज़मा के लिये मुतअ़य्यन हो जाए, वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निशानी है, उस का एह़तिराम करना चाहिये, जैसे कुरआन का जुज़दान, गि़लाफ़े का'बा, आबे ज़मज़म और सरज़मीने मक्का शरीफ़ वगै़रा का एह़तिराम करना ज़रूरी है क्यूंकि इन को रब عَزَّوَجَلَّ या उस के प्यारों से निस्बत है, लिहाज़ा इन सब की ता'ज़ीम ज़रूरी है। तूरे सीना पहाड़ और मक्कए मुअ़ज़्ज़मा इस लिये अ़ज़मत वाले बन गए कि तूर को ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام से और मक्कए मुअ़ज़्ज़मा को हमारे प्यारे आक़ा, ह़बीबुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत हो गई । खुलासा येह है कि अल्लाह के प्यारों की चीज़ें, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निशानियां हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की निशानियों की ता'ज़ीमो तौक़ीर कुरआनी फ़तवे से दिली तक्वा है, लिहाज़ा जो कोई नमाज़ी, रोज़ादार तो हो मगर उस के दिल में तबर्रुकात की ता'ज़ीम न हो, वोह दिली परहेज़गार नहीं ।

(इल्मुल कुरआन, स. 48 ता 50, मुल्तक़तन, बित्तग़य्युर क़लील)

*दोनों आ़लम में हुवा वोह सुर्ख़रू जिस को उन की चश्मे रह़मत मिल गई*
*मैं इमाम अह़मद रज़ा का हूं गुलाम कितनी आ'ला मुझ को निस्बत मिल गई*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 400)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! अभी हम ने निस्बत की बहारें मुलाह़ज़ा कीं । अगर हम अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के वाक़िए पर ग़ौर करें, तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वहां भी हमें निस्बत का फ़ैज़ान दिखाई देगा । कुत्ते को उ़मूमन एक मा'मूली सा जानवर समझा जाता है, राह चलते लोगों पर भौंकना उस की आ़दत में शामिल होता है लेकिन अगर इसी जानवर को अल्लाह वालों की निस्बत व सोह़बत मिल जाए तो फिर वोह आ़म कुत्ता नहीं रहता बल्कि उस की शानो शौकत और अहम्मिय्यत व रिफ़अ़त कई गुना बढ़ जाती है । अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के कुत्ते का भी कुछ येही मुआ़मला है कि जो पहले एक आ़म सा कुत्ता था मगर उसे अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से मह़ब्बत व उल्फ़त हो गई थी, लिहाज़ा वोह उन अल्लाह वालों की मह़ब्बत में उन का रफ़ीक़ व

शरीके सफ़र और मुह़ाफ़िज़ बन गया, औलियाए किराम رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن की सोह़बत व निस्बत की बरकतें क्या नसीब हुई, उस की तो क़िस्मत चमक उठी और उस का मक़ामो मर्तबा इतना बुलन्द हो गया कि रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ ने अपने पाकीज़ा कलाम कु़रआने करीम में अपने मक़्बूल बन्दों या'नी अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُم के साथ साथ उस का भी ज़िक्र फ़रमाया । चुनान्चे, पारह 15 सूरतुल कह्फ़ की आयत नम्बर 18 में इरशादे ख़ुदावन्दी है :

وَ کَلۡبُہُمۡ بَاسِطٌ ذِرَاعَیۡہِ بِالۡوَصِیۡدِ ؕ

(پ۱۵، الکہف:۱۸)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और उन का कुत्ता अपनी कलाइयां फैलाए हुवे है ग़ार की चौखट पर ।*

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : बुज़ुर्गों की सोह़बत का कुत्ते पर इतना असर हुवा कि उस का ज़िक्र इ़ज़्ज़त से कु़रआन में आया और उस के नाम के वज़ीफ़े पढ़े जाने लगे, उस को हमेशा की ज़िन्दगी नसीब हुई, मिट्टी उसे नहीं खाती । तो जिस इन्सान को नबी की सोह़बत नसीब हो, उस का क्या पूछना !

(नूरुल इ़रफ़ान, पा. 15, अल कह्फ़, तह़्तुल आयत : 18, स. 470, बित्तग़य्युर क़लील)

## कुत्ते के नुक़्सान से मह़फ़ूज़ रहने का वज़ीफ़ा

सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि तफ़्सीरे सा'लबी में है : जो कोई इन कलिमात وَ کَلۡبُہُمۡ بَاسِطٌ ذِرَاعَیۡہِ بِالۡوَصِیۡدِ ؕ को लिख कर अपने साथ रखे, कुत्ते के शर से अम्न में रहेगा ।

(ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पा.15, अल कह्फ़, तह़्तुल आयत : 18, स. 551, बित्तग़य्युर क़लील)

अगर कुत्ता भौंकता हुवा लपके, ह़म्ला आवर हो, तो येही कु़रआनी कलिमात पढ़ लीजिये, اِنۡ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ वोह कुछ न बिगाड़ सकेगा ।

(सगे मदीना कहना कैसा ?, स. 31)

अस्ह़ाबे कह्फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُم के कुत्ते का मक़ामो मर्तबा बयान करते हुवे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान

رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अस्हाबे कह्फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم का कुत्ता, बल्अ़म बाऊ़र की शक्ल (का) बन कर जन्नत में जाएगा और वोह उस कुत्ते की शक्ल (का) हो कर दोज़ख़ में पड़ेगा । उस (या'नी अस्हाबे कह्फ़ के कुत्ते) ने मह़बूबाने ख़ुदा का साथ दिया, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने उस को इन्सान बना कर जन्नत अ़त़ा फ़रमाई और उस (या'नी बल्अ़म बाऊ़र) ने मह़बूबाने ख़ुदा से अ़दावत (या'नी दुश्मनी) की (नतीजतन वोह तबाह व बरबाद हो गया) ।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 366, बित्तग़य्युर क़लील)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, चन्द जानवर जन्नत में जाएंगे : (1) ह़ुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ऊंटनी क़स्वा (2) अस्हाबे कह्फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم का कुत्ता (3) ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ऊंटनी और (4) ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूह़ुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का दराज़ गोश ।

(मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 501, बित्तग़य्युर क़लील)

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाते हैं : अगर ज़मीन मस्जिद के लिये वक़्फ़ हो जाए, तो उस की शानो अ़ज़मत बढ़ जाती है, अस्हाबे कह्फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم के कुत्ते ने अपनी ज़िन्दगी **अल्लाह** तआ़ला के प्यारों के लिये वक़्फ़ कर दी, तो उसे हमेशा की ज़िन्दगी मिल गई । ज़मीन और कुत्ता ज़िन्दगी वक़्फ़ करने की वज्ह से शान वाले हो गए, तो अगर इन्सान अपनी ज़िन्दगी **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा व ख़ुश्नूदी के ह़ुसूल की ख़ातिर दीन के लिये वक़्फ़ कर दे, तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों से भी अफ़्ज़ल हो जाएगा ।

(तफ़्सीरे नईमी, पा. 3, अल बक़रह, तह़्तुल आयत : 273, 3 / 134, बित्तग़य्युर क़लील)

## अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दों से मह़ब्बत की बरकत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अह़मद क़ुर्तुबी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जब नेक बन्दों और औलियाए किराम رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن की सोह़बत में रहने की बरकत से एक कुत्ता इतना बुलन्द मक़ाम पा गया कि **अल्लाह** तआ़ला ने उस का ज़िक्र क़ुरआने पाक में

फ़रमाया, तो उस मुसलमान के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है जो औलियाए किराम رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن और नेक बन्दों से मह़ब्बत करने वाला और उन की सोह़बत से फ़ैज़याब होने वाला है बल्कि इस आयत में उन मुसलमानों के लिये तसल्ली है जो किसी बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ नहीं।

(تفسیر قرطبی، پ۱۵، الکھف، تحت الآیۃ: ۱۸، الجزء۵، ۱۰/۲۶۹)

या'नी उन के लिये तसल्ली है कि वोह अपनी इस मह़ब्बतो अ़क़ीदत की वज्ह से **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में कामयाब होंगे।

(सिरातुल जिनान, पा. 15, अल कह्फ़, तह़तुल आयत : 18, 5 / 550)

*ख़ाक मुझ में कमाल रखा है  मुर्शिदी ने संभाल रखा है*
*मेरे ऐबों पे डाल कर पर्दा  मुझ को अच्छों में डाल रखा है*

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب!  صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! हमें भी चाहिये कि **अल्लाह** वालों से ख़ूब ख़ूब अ़क़ीदतो मह़ब्बत रखें और इस के साथ साथ उन के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे नमाज़, रोज़े की पाबन्दी करें नीज़ अच्छे आ'माल इख़्तियार करते हुवे बुरे आ'माल से हर दम खुद को बचाने की भरपूर अ़मली कोशिश जारी रखें। ख़ास तौ़र पर **अल्लाह** वालों की बे अदबी, दुश्मनी और अ़दावत से दूर रहें क्यूंकि इस का अन्जाम बहुत बुरा है। ह़दीसे क़ुदसी में है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : مَنۡ عَادٰی لِی وَلِیًّا فَقَدۡ اٰذَنۡتُهٗ بِالۡحَرۡبِ जिस ने मेरे किसी वली से दुश्मनी की, मैं उस से ए'लाने जंग करता हूं।

(بخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع...الخ، ۴/۲۴۸، حدیث: ۶۵۰۲)

बे अदबी की मज़म्मत बयान करते हुवे नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَدَبُ السُّوۡءِ کَعِرۡقِ السُّوۡءِ बे अदबी बहुत बुरी आ़दत की त़रह़ है। (شعب الایمان، باب فی الجود والسخاء، حدیث: ۱۰۹۷۴، ۷/ ۴۵۵)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : हमें ज़ियादा इ़ल्म के मुक़ाबले में थोड़े अदब की ज़ियादा ज़रूरत है।

(رسالہ قشیریہ، باب الادب، ص۳۱۷)

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : لَادِيْنَ لِمَنْ لَّا اَدَبَ لَهٗ जो बा अदब नहीं, उस का कोई दीन नहीं । (फ़तावा रज़विय्या, 28 / 158) किसी दाना का क़ौल है : مَاوَصَلَ مَنْ وَصَلَ اِلَّا بِالْحُرْمَةِ وَمَاسَقَطَ مَنْ سَقَطَ اِلَّا بِتَرْكِ الْحُرْمَةِ जिस ने जो कुछ पाया अदबो एह़तिराम करने के सबब ही पाया और जिस ने जो कुछ खोया वोह अदबो एह़तिराम न करने के सबब ही खोया । (राहे इ़ल्म, स. 29)

मश्हूर कहावत है कि "**बा अदब, बा नसीब, बे अदब, बद नसीब**" लिहाज़ा हर मुसलमान को चाहिये कि वोह बे अदबी और बे अदबों से दूर रहे और दिलो जान से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वलियों का अदब बजा लाए क्यूंकि अदब इन्सान को दुन्या व आख़िरत में काम्याबियां और इ़ज़्ज़तो शोहरत दिलवाता है, येह वोह अनमोल चीज़ है कि जिस की ता'लीम ख़ुद रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ ने अपने मदनी ह़बीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाई । चुनान्चे,

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَدَّبَنِیْ رَبِّیْ فَاَحْسَنَ تَاْدِيْبِیْ मुझे मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने अदब सिखाया और बहुत अच्छा अदब सिखाया । (جامع صغیر، حرف الھمزہ، حدیث: ۳۱۰، ص۲۵)

बहर ह़ाल इ़ज़्ज़त व ज़िल्लत सब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इख़्तियार में है, वोह चाहे तो अपने प्यारों से निस्बत और उन का अदब बजा लाने की बरकत से एक कुत्ते को भी नवाज़ दे और उस के सर पर इ़ज़्ज़त का ताज सजा कर उसे जन्नत का परवाना अ़त़ा फ़रमा दे और चाहे तो बल्अ़म बिन बाऊ़र जैसे मक़्बूले बारगाह को बे अदबी व गुस्ताख़ी की वज्ह से अपनी बारगाह से धुत्कार दे । बल्अ़म बाऊ़र बनी इस्राईल में बहुत बड़ा आ़लिम था, मुस्तजाबुद्दा'वात था (या'नी उस की दुआ़ क़बूल होती थी) माल के लालच में ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये बद दुआ़ करनी चाही, जो अल्फ़ाज़ ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये कहना चाहता था, अपने लिये निकलते थे, अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ने उस को हलाक कर दिया ।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 367, बित्तग़य्युर क़लील)

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं।

*मह़फ़ूज़ सदा रखना शहा ! बे अदबों से*
*और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 315)

## जामिअ़तुल मदीना ऑन लाइन

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! اَلۡحَمۡدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी 100 से ज़ाइद शो'बाजात में दीने मतीन की ख़िदमत में मसरूफ़ है, जिस में से एक शो'बा **"जामिअ़तुल मदीना ऑन लाइन"** भी है।

اَلۡحَمۡدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! जामिअ़तुल मदीना ऑन लाइन के तह़त भी मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ का सिलसिला शुरूअ़ किया गया है, येह कोर्सिज़ कौन कौन से हैं। आइये ! इन कोर्सिज़ की चन्द झल्कियां सुनते हैं : ❖ त़हारत कोर्स ❖ नमाज़ कोर्स ❖ अ़क़ाइद व फ़िक़्ह कोर्स ❖ फ़ैज़ाने ज़कात कोर्स ❖ दर्सें निज़ामी ऑन लाइन ❖ फ़ैज़ाने बहारे शरीअ़त कोर्स ❖ फ़ैज़ाने फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स ❖ फ़ैज़ाने तफ़्सीर कोर्स ❖ तजहीज़ो तक्फ़ीन कोर्स ❖ फ़ैज़ाने तफ़्सीरे सिरातुल जिनान कोर्स ❖ फ़ैज़ाने रमज़ान कोर्स ❖ कुरबानी कोर्स वग़ैरा। हर कोर्स की मुद्दत और दौरानिया मुख़्तलिफ़ है, इन कोर्सिज़ में दाख़िलों का त़रीक़ े कार दा'वते इस्लामी की वेबसाइट (www.dawateislami.net) पर दिया हुवा है। इस के इ़लावा इन नम्बर्ज़

+92 321–2799484, +92 333–5262526

पर कॉल या वोट्स ऐप (Whats App) के ज़रीए़ भी राबित़ा किया जा सकता है। येह कोर्स करने के ख़्वाहिश मन्द इस्लामी भाई अपनी सहूलत के मुत़ाबिक़ डबल बारह घंटों में से कोई भी टाइम ले सकते हैं।

*अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में*
*ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो*

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

## बयान का खुलासा

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! आज के बयान में हम ने सुना कि :

❖ अस्हाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم या'नी ग़ार वाले, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानियों में से एक अ़जीब निशानी थे।

❖ अस्हाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ईमान की ह़िफ़ाज़त के मदनी जज़्बे से सरशार नेक लोग थे।

❖ अस्हाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की बरकत से कसीर लोग गुमराही से मह़फ़ूज़ हो गए।

❖ अस्हाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का जिस्मे मुबारक त़वील अ़र्सा सोने के बा वुजूद भी सलामत रहा, जो इन की खुली करामत थी।

❖ अस्हाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم नमाज़ की अदाएगी बजा लाने और सलाम को आ़म करने वाले लोग थे।

❖ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ग़ार के कुर्बो जवार में एक ख़ास हैबत के ज़रीए़ अस्हाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की ह़िफ़ाज़त फ़रमाई।

❖ मज़ारात पर जाना और वहां जा कर दुआ़एं करना, बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن का मा'मूल है।

❖ मज़ारात के कुर्ब में मस्जिदें बनाना नेक लोगों का त़रीक़ा रहा है।

❖ अस्हाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का कुत्ता, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वलियों से निस्बत व मह़ब्बत का शरफ़ पा कर और उन का अदब बजा ला कर बारगाहे इलाही में मक़्बूल और जन्नती हो गया।

❖ अस्हाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के अस्माए गिरामी की बरकत से आग से ह़िफ़ाज़त होती है, अस्हाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के अस्माए गिरामी की बरकत से सरमाया मह़फ़ूज़ रहता है, अस्हाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के अस्माए गिरामी की बरकत से कश्ती व जहाज़ डूबने से मह़फ़ूज़ रहते हैं, अस्हाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के अस्माए गिरामी की बरकत से भागा हुवा शख़्स वापस आ जाता है। अल ग़रज़ ! इन वलियों के नामों की बरकत से बहुत सी परेशानियों से छुटकारा नसीब हो जाता है।

**अल्लाह** तआ़ला अस्हाबे कह्फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم के तुफ़ैल हमें औलियाए किराम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡھِمۡ اَجۡمَعِیۡن का अदबो एह़तिराम और इन की सच्ची पक्की अ़क़ीदतो मह़ब्बत नसीब फ़रमाए।

اٰمِیۡن بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِیۡن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशाए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۹۷، حدیث:۱۷۵)

*सुन्नत के मुत़ाबिक़ मैं हर इक काम करूं काश !*

*तू पैकरे सुन्नत मुझे **अल्लाह** ! बना दे*

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 118)

## घर में आने जाने की सुन्नतें और आदाब

**आइये** ! शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ के रिसाले "**101 मदनी फूल**" से घर में आने जाने की चन्द सुन्नतें और आदाब सुनते हैं : ❖ जब घर से बाहर निकलें तो येह दुआ़ पढ़िये :

بِسۡمِ اللّٰہِ تَوَکَّلۡتُ عَلَی اللّٰہِ لَاحَوۡلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ

**तर्जमा : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से, मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया, **अल्लाह** के बिगै़र न त़ाक़त है न क़ुव्वत।) (ابوداود، ۴/۴۲۰، حدیث:۵۰۹۵) اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस दुआ़ को पढ़ने की बरकत से सीधी राह पर रहेंगे, आफ़तों से ह़िफ़ाज़त होगी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद शामिले ह़ाल रहेगी। ❖ अपने

घर में आते जाते मह़ारिम व मह़रिमात (मसलन मां, बाप, भाई, बहन, बाल बच्चे वग़ैरा) को सलाम कीजिये। ❖ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम लिये बिग़ैर, मसलन बिस्मिल्लाह कहे बिग़ैर जो घर में दाख़िल होता है, शैत़ान भी उस के साथ दाख़िल हो जाता है। ❖ अगर ऐसे मकान (ख़्वाह अपने ख़ाली घर) में जाना हो कि उस में कोई न हो, तो येह कहिये : اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللهِ الصّٰلِحِيْن (या'नी हम पर और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों पर सलाम) फ़िरिश्ते इस सलाम का जवाब देंगे। (رَدُّالْمُحتار، ۹ / ۶۸۲) या इस त़रह़ कहे : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ (या नबी आप पर सलाम) क्यूंकि हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूहे़ मुबारक मुसलमानों के घरों में तशरीफ़ फ़रमा होती है। (شرح الشّفاء للقاری، ۲/۱۱۸) ❖ जब किसी के घर में दाख़िल होना चाहें, तो इस त़रह़ कहिये : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ क्या मैं अन्दर आ सकता हूं ? ❖ अगर दाख़िले की इजाज़त न मिले तो ब ख़ुशी लौट जाइये, हो सकता है किसी मजबूरी के तह़्त साहि़बे ख़ाना ने इजाज़त न दी हो। ❖ जवाब में नाम बताने के बा'द दरवाज़े से हट कर खड़े हों ताकि दरवाज़ा खुलते ही घर के अन्दर नज़र न पड़े। ❖ किसी के घर जाएं तो वहां के इन्तिज़ामात पर बेजा तन्क़ीद न कीजिये, इस से उस की दिल आज़ारी हो सकती है। ❖ वापसी पर अहले ख़ाना के ह़क़ में दुआ़ भी कीजिये और शुक्रिया भी अदा कीजिये और सलाम भी और हो सके तो कोई सुन्नतों भरा रिसाला वग़ैरा भी तोह़फ़तन पेश कीजिये।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब **बहारे शरीअ़त हि़स्सा 16** (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब **"सुन्नतें और आदाब"** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

*इ़ल्म ह़ासिल करो, जहल ज़ाइल करो — पाओगे राह़तें, क़ाफ़िले में चलो*
*सुन्नतें सीखने, तीन दिन के लिये — हर महीने चलें, क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

# दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक और 2 दुआएं

**﴾1﴿ शबे जुमुआ़ का दुरूद :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الْحَبِیْبِ الْعَالِی الْقَدْرِ الْعَظِیْمِ الْجَاہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَسَلِّمْ

**बुज़ुर्गों** ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़् कम एक मरतबा पढ़ेगा तो मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे **क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं ।** (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات ص ۱۵۱ ملخصًا)

**﴾2﴿ तमाम गुनाह मुआ़फ़ :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَسَلِّمْ

**ह़ज़रते** सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के **गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।** (اَیضاً ص ۶۵)

**﴾3﴿ रह़मत के सत्तर दरवाज़े :** صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

**जो** येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर **रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۲۷۷)

**﴾4﴿ दुरूदे शफ़ाअ़त :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْہُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ

शाफ़ेए़ उमम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये **मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है ! ! !**

(الترغیب والترہیب ج۲ ص۳۲۹، حدیث۳۱)

**﴾5﴿ छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللّٰہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْکِ اللّٰہِ

**हज़रते** अह़मद सावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से **छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब** ह़ासिल होता है । (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات)

**﴾6﴿ कुर्बे मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

**एक** दिन एक शख़्स आया तो हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया । इस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि **येह कौन ज़ी मर्तबा है !!!** जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है । (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ۱۲۵)

## एक हज़ार दिन की नेकियां

جَزَی اللّٰہُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا ھُوَ اَھْلُہٗ

**हज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस को पढ़ने वाले के लिये **सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं ।** (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

## गोया शबे क़द्र ह़ासिल कर ली

**फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने इस दुआ़ को 3 मरतबा पढ़ा तो गोया उस ने शबे क़द्र ह़ासिल कर ली । (تاریخ ابنِ عساکر، ۱۹/۱۵۵، حدیث: ۴۴۱۵)

दुआ़ येह है :

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْحَلِیْمُ الْکَرِیْمُ، سُبْحٰنَ اللّٰہِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْم

(या'नी ख़ुदाए ह़लीम व करीम के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सातों आस्मानों और अ़र्शे अ़ज़ीम का परवर दगार है) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. 1163-1164)